NEERAJ®

भारतीय काव्यशास्त्र

B.H.D.C.-106

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Dr. Rajesh Kumar

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारतीय काव्यशास्त्र

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भारतीय काव्यशास्त्र : एक परिचय 1

2. हिंदी काव्यशास्त्र का विकास : संदर्भ–रीतिकाल 14

3. हिंदी काव्यशास्त्र का विकास : संदर्भ–आधुनिक काल 24

4. काव्य-लक्षण 33

5. काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन 45

6. रस सिद्धांत : अवधारणा और आयाम 60

7. रस निष्पत्ति एवं साधारणीकरण 69

8. अलंकार संप्रदाय : स्वरूप एवं आयाम 80

9. काव्यालंकार : स्वरूप एवं प्रकार 90

10. रीति सम्प्रदाय : अवधारणा एवं आयाम 99

11. ध्वनि सम्प्रदाय : अवधारणा एवं प्रकार 108

12. वक्रोक्ति सम्प्रदाय : स्वरूप और परिधि 121

13. औचित्य सम्प्रदाय : अवधारणा एवं स्वरूप 130

14. छंद : स्वरूप और प्रकार 140

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय काव्यशास्त्र **B.H.D.C.-106**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. काव्यशास्त्र का आशय स्पष्ट करते हुए भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'परिचय', 'काव्यशास्त्र : स्वरूप, अभिप्राय एवं काव्यशास्त्र के प्रमुख संप्रदाय'

प्रश्न 2. रीतिकाल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिंतन परंपरा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-18, प्रश्न 3

प्रश्न 3. रीतिकाल में हुए काव्यशास्त्र के विकास पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'रीतिकाल में काव्यशास्त्र का विकास'

प्रश्न 4. रस निरूपण के विभिन्न आयार्यों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-60, 'रस का अर्थ', 'रस चिंतन के प्रमुख आचार्य'

प्रश्न 5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न 3

प्रश्न 6. काव्य-लक्षण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए मम्पट के काव्य-लक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-33, 'काव्य लक्षण का अभिप्राय', पृष्ठ-34, 'मम्मट'

प्रश्न 7. काव्य-प्रयोजन संबंधी विभिन्न आचार्यों के मतों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-46, 'काव्य प्रयोजन : आशय एवं परिधि'

प्रश्न 8. साधारणीकरण का आशय बताते हुए इस संबंध अभिनव गुप्त के मत का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-70, 'साधारणीकरण का अभिप्राय', पृष्ठ-71, 'आचार्य अभिनवगुप्त'

प्रश्न 9. हिंदी साहित्य में अलंकार संबंधी चिंतन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-82, 'हिंदी साहित्य में अलंकार संबंधी चिंतन'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) प्रतिभा का स्वरूप

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-48, प्रश्न 1

(ख) भुक्तिवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-65, प्रश्न 4

(ग) अलंकार

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-90, 'अलंकार का अर्थ'

(घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का काव्य-प्रयोजन

उत्तर–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी कलावाद-रूपवाद को अस्वीकार करते हुए लोकमंगल को साहित्य का प्रयोजन माना। उनके निबन्धों 'कविता क्या है', 'लोकमंगल की साधनावस्था' आदि में उनका काव्य-प्रयोजन सम्बन्धी दृष्टिकोण स्पष्ट है। वह व्यक्तिवैचित्र्यवाद का विरोध करके लोक-चेतना के परिष्कार तथा लोकमंगल की भावना को ही कवि का दायित्व मानते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सम्पर्क में रहे थे और रवीन्द्र के मानवतावादी दृष्टिकोण का उन पर प्रभाव पड़ा था। अत: वह साहित्य का प्रयोजन लोक-चिंता घोषित करते हैं। उनकी दृष्टि में काव्य का प्रधान लक्ष्य है–मानव कल्याण, व्यक्ति के रूप में भी तथा समाज के रूप में भी। व्यष्टि और समष्टि का हित ही कवि की प्रथम और प्रधान चिन्ता होनी चाहिए।

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारतीय काव्यशास्त्र **B.H.D.C.-106**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 'रस' का अर्थ स्पष्ट करते हुए रस चिंतन के प्रमुख आचार्यों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-6, पृष्ठ-60, 'रस का अर्थ', 'रस चिंतन के प्रमुख आचार्य'

प्रश्न 2. काव्य-लक्षण संबंधी आधुनिक हिन्दी आलोचकों के मत का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-4, पृष्ठ-39, प्रश्न 6

प्रश्न 3. हिन्दी काव्यशास्त्र की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-3, पृष्ठ-28, प्रश्न 4

प्रश्न 4. अलंकार संप्रदाय की विकासात्मक यात्रा की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 5

प्रश्न 5. शब्द-शक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए लक्षणा शब्द-शक्ति पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-11, पृष्ठ-109, 'शब्द शक्तियाँ', पृष्ठ-111, प्रश्न 2

प्रश्न 6. 'रीति' शब्द का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इसके समर्थक आचार्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-10, पृष्ठ-99, 'रीति शब्द का अभिप्राय', 'प्रमुख रीति समर्थक आचार्य'

प्रश्न 7. वक्रोक्ति सिद्धांत का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-12, पृष्ठ-125, प्रश्न 4

प्रश्न 8. ध्वनि सिद्धांत के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-11, पृष्ठ-108, 'परिचय', 'ध्वनि सिद्धांत : अवधारणा एवं स्वरूप'

प्रश्न 9. काव्य-प्रयोजन संबंधी विभिन्न आचार्यों के मत का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-5, पृष्ठ-46, 'काव्य प्रयोजन आशय और परिधि'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) भरतमुनि का रस सूत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 2

(ख) वार्णिक छंद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-14, पृष्ठ-146, प्रश्न 4

(ग) अलंकार का महत्त्व

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-8, पृष्ठ-87, प्रश्न 1

(घ) औचित्य विवेचन की समस्याएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अभ्यास-13, पृष्ठ-132, 'औचित्य विवेचन की समस्याएँ'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय काव्यशास्त्र

भारतीय काव्यशास्त्र : एक परिचय

1

परिचय

काव्यकार यथार्थ जगत और अपने जीवन से प्राप्त अनुभव को अपनी प्रतिभा के आधार पर रसमय और आनंदायक बनाकर उसकी पुनः संरचना करता है और यह सरंचना ही काव्य कहलाती है। जिस प्रकार कवि के जीवन और जगत में बदलाव होने के साथ उसकी अनुभूति एवं प्रतिभा में भी बदलाव पाया जाता है, ठीक उसी प्रकार काव्य में भी समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलाव होता रहता है। भारतीय आचार्यों ने काव्य के इस बदलाव को अनुभव किया तथा काव्य-रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन को व्याख्यायित किया, जिसके कारण रस के अतिरिक्त अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य आदि सम्प्रदाय उभरकर सामने आए।

अध्याय का विहंगावलोकन

काव्यशास्त्र : स्वरूप, अभिप्राय एवं परिचय

साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि समाज का सजीव चित्रण काव्यकारों द्वारा अपनी रचनाओं के माध्यम से किया जाता है, इसलिए मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है, क्योंकि काव्य व्यक्ति के अंदर जीवन मूल्यों के अतिरिक्त प्रकृतिक रूप से भिन्न भिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं और मानव के प्रति संवेदना जागृत करने का कार्य भी करती है। मनुष्य मन की मूल प्रवृतियां–सुख, दुःख, हर्ष, शोक, क्रोध, विस्मय, घृणा, जुगुप्सा, भय आदि वास्तविकता पर आधारित होती हैं, जिनका वर्णन करना ही काव्य का प्रमुख ध्येय होता है।

भरतमुनि के 'नाट्शास्त्र' में रस से तात्पर्य काव्य का अध्ययन करने अथवा नाटक में अभिनेता के अभिनय को देखकर पाठक के मन में जिस आनंद का अनुभव होता है, वही रस है। यह रस कैसे प्राप्त होगा? पाठक या श्रोता इसका अनुभव कैसे करेगा? इसी संदर्भ में रस, अंलकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदाय उभरे।

इसके परिणामस्वरूप काव्य में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। प्राचीन विद्वानों ने इस परिवर्तन को महसूस किया है। उसके बाद काव्य-रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन की व्याख्या को प्रस्तुत किया है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसका अध्ययन आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है।

भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय

भारतीय काव्यशास्त्र में विभिन्न सम्प्रदाय उभरकर सामने आये, जिनका परिचय निम्नलिखित है–

रस सम्प्रदाय–भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में रस का विस्तृत वर्णन किया है। मनुष्य के जीवन में 'रस' का प्रयोग आनंद उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त, भोजराज, विश्वनाथ पण्डितराज जगन्नाथ, केशवदास, रामचंद्र शुक्ल जैसे आचार्यों ने रस सिद्धांत की परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया। भरतमुनि रस सिद्धांत को सूत्रबद्ध करते हुए कहते हैं–

'विभावनुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'

अर्थात विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। संयोग और निष्पत्ति को लेकर कुछ विद्वानों में मतभेद भी रहा है।

उत्पत्तिवाद–भट्टलोल्लट संयोग का अर्थ उत्पाद्य-उत्पादक संबंध के आधार पर करते हैं और 'निष्पत्ति' का अर्थ उत्पति मानकर वे कहते हैं कि विभावादि तत्वों का संयोग स्थायी भाव से माना जाता है। इसी तरह विभावों से स्थायी भाव का संयोग होने से रस की उत्पत्ति होती है। अनुभावों से उनकी प्रतीति होती है और संचारी भावों से उसकी पुष्टि होती है। भट्टलोल्लट रस की स्थिति को 'अनुकार्य' अर्थात ऐतिहासिक पात्र राम अथवा सीता आदि ऐतिहासिक पात्रों में मानते हैं।

अनुमितिवाद–शंकुक संयोग का अर्थ अनुमाप्य और अनुमापक संबंध के आधार पर मानते हैं एवं उत्पति का अर्थ अनुमिति के आधार पर स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार विभावादि अनुमापक

www.neerajbooks.com

एवं रस को अनुमाप्य माना है। रस की स्थिति को शंकुक ऐतिहासिक पात्रों में ही मानते हैं। जैसे किसी घोड़े के चित्र को देखते हुए घोड़े का अनुमान कर लेना।

भुक्तिवाद–भट्टनायक ने सबसे पहले रस निष्पत्ति का वर्णन काव्य को मध्य में रखरकर किया है। इन्होंने विभाव आदि को भोज्य और संयोग के अर्थ भोज्य-भोजक संबंध बताया एवं निष्पत्ति का अर्थ भुक्ति को मानते हैं। भट्टनायक रस निष्पत्ति का वर्णन काव्य को केन्द्र में रखकर करते हैं। वे विभावादि को भोजक और रस को भोज्य रूप में स्वीकार करते हैं। व्याख्याकारों ने अपने ढंग से व्याख्यायित किया है।

अभिव्यक्तिवाद में अभिनवगुप्त संयोग का अर्थ व्यंग्य-व्यंजक संबंध और निष्पत्ति को अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया है। आचार्य विश्वनाथ रसात्मक वाक्य को काव्य मानते हैं। आनंदवर्धन, महिमभट्ट, राजशेखर, पंडितराज जगन्नाथ, कुंतक, जयदेव आदि सभी रस के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।

अलंकार सम्प्रदाय

काव्य के क्षेत्र में अलंकारत्व की स्थापना का इतिहास बहुत पुराना रहा है। प्राचीन भारतीय साहित्य में अलंकार शब्द को सौंदर्य का पर्यायवाची माना गया है। अलंकार का शब्दिक अर्थ है–आभूषण अर्थात शोभा बढ़ाने वाला। भरतमुनि के रस सम्प्रदाय के बाद अलंकार सम्प्रदाय ही सबसे प्राचीन माना जाता है। 'नाट्यशास्त्र' में उपमा, रूपक, दीपक और यमक इन चार अलंकारों की चर्चा हुई है। भामह ने वक्रोक्ति को सभी अलंकारों का मूल माना है। अलंकारवादी आचार्य अलंकारों को काव्य का मूल मानते हैं और इनके बिना काव्य की कल्पना संभव नहीं मानते।

उदाहरण के रूप में जिस प्रकार नायिका का सौंदर्य अलंकार्य है, परंतु उस सौंदर्य के वर्णन के लिए चांद, गुलाब आदि की जो उपमा दी जाती है, काव्य की दृष्टि में वही अलंकार है। भामह और दण्डी दोनों को भिन्न मानते हैं, जैसे–प्राण और शरीर की सत्ता भिन्न होती है।

रसवादी आचार्यों ने अलंकार्य और अलंकारों में अंतर स्पष्ट करते हुए इन्हें दो भागों में विभक्त किया है–प्रत्यक्ष और मूल। शब्द और अर्थ से तात्पर्य शब्दालंकार और अर्थालंकार से होता है। शब्द और अर्थ तथा रस प्रत्यक्ष रूप माने जाते हैं। इन दोनों के सौंदर्य में वृद्धि अलंकारों के द्वारा ही संभव होती है।

रीति संप्रदाय

रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन माने जाते हैं, जो रीति को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। 'रीति' का संकेत भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में भी देखने को मिलता है, जिसे वे प्रवृत्ति कहते हैं, जो विभिन्न देशों के रहन-सहन, वेशभूषा, आचार और व्यवहार को अभिव्यक्त करे, उसे प्रवृत्ति कहा गया है। इसे चार भेदों में विभक्त किया गया है–

1. आवंती,
2. दाक्षिणात्य
3. पांचाली
4. मागधी।

भामह काव्य के दो भेद मानते हैं–वैदर्भी और गौडीय। वामन विशिष्ट पद रचना को रीति मानते हैं तथा उनके अनुसार रीतियां तीन प्रकार की हैं–वैदर्भी, गौडीय और पांचाली। आचार्य वामन रीति के तीन तत्वों–गुण, दोष और अलंकार की चर्चा काव्य में करते हैं।

वैदर्भी में सभी गुण, गौडीय में केवल ओज और कान्ति एवं पांचाली में माधुर्य और सौकुमार्य गुणों को स्वीकार किया गया है। वामन रीति के तीन तत्वों–गुण, दोष और अलंकार की चर्चा काव्य में निम्न आधार पर करते हैं।

गुण–आचार्य वामन ने सर्वप्रथम गुणों का विस्तृत वर्णन किया है। 'काव्य शोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।' अर्थात काव्य के शोभावर्धक सभी तत्व गुणों के अंतर्गत आते हैं।

दोष–आचार्य वामन रीति-निरूपण का दूसरा तत्व दोष को मानते हैं, क्योंकि जब तक किसी रचना में दोष नहीं होगा, तब तक गुणों का समावेश सौंदर्य की सृष्टि करने में समर्थ नहीं हो सकता। रीति के संदर्भ में वामन ने अपने मतानुसार स्पष्ट शब्दों और निर्भ्रांत शैली में व्याख्यायित किया है। अनावश्यक विस्तार को बताते हुए केवल आवश्यक का ही विधान किया है।

अलंकार–अलंकारवादी आचार्यों ने अलंकार को काव्य का 'नित्य' धर्म माना, परंतु वामन ने अलंकार को काव्य का 'अनित्य' धर्म स्वीकार किया और कहा कि सौंदर्य उत्पन्न करने की शक्ति गुणों में है, किंतु अलंकार सौंदर्य उत्पन्न नहीं कर सकते, वे केवल पहले से विद्यमान सौन्दर्य की अभिवृद्धि कर सकते हैं। वामन ने अलंकारों को शब्दालंकार और अर्थालंकार में विभाजित किया और शब्दालंकारों में यमक और अनुप्रास को ही मान्यता दी तथा शेष को इन्हीं के भेद स्वीकार किया। उन्होंने अर्थालंकारों में उपमा को सर्वश्रेष्ठ माना और शेष को उपमा के विभिन्न रूपों व भेदों के रूप में स्वीकृति दी।

ध्वनि संप्रदाय

ध्वनि सम्प्रदाय के प्रर्वतक आचार्य आनंदवर्धन माने जाते हैं। वे ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। ध्वनि का संबंध व्यंजना शब्द शक्ति से है। जिस क्षमता के आधार पर वाक्य का अर्थ निश्चित होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

अभिधा शब्द शक्ति–मुख्य अर्थ अथवा वाच्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है। जिस शब्द के द्वारा मुख्यार्थ का बोध हो वह वाचक कहलाता है और उससे निकलने वाला मुख्य अर्थ वाच्यार्थ होता है। इसके माध्यम से तीन प्रकार के शब्दों की अभिव्यक्ति होती है–रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

लक्षणा शब्द शक्ति–मुख्यार्थ में रुकावट होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के सहारे उससे संबंधित जहां पर अन्य अर्थ लक्षित होता है, वहां लक्षणा शक्ति होती है। यह गौण अर्थ मुख्य अर्थ से संबंधित होता है और इसे रूढ़ अर्थ के सहारे ग्रहण किया जाता है।

1. रूढ़ा लक्षणा शब्द शक्ति–जिस वाक्य में मुख्यार्थ के रुकावट होने पर रूढ़ि के सहारे मुख्यार्थ से संबद्ध दूसरे गौण अर्थ को ग्रहण किया जाए, वहां रूढ़ा लक्षणा शब्द शक्ति होती है।

2. प्रयोजनवती लक्षणा शब्द शक्ति–जिस वाक्य में मुख्यार्थ में रुकावट होने पर किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ से संबंध दूसरा गौण अर्थ ग्रहण किया जाए, वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

व्यंजना शब्द शक्ति–व्यंजना का अभिप्राय है विशेष रूप से स्पष्ट करना, जो शब्द शक्ति बाह्य सौंदर्य के रेशमी पर्दे को हटाकर काव्य के वास्तविक लावण्य को व्यक्त करती है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। इसके दो भेद हैं–

(क) अभिधामूला ध्वनि–इसमें शब्द का वाच्यार्थ बना रहता है, परंतु वह व्यंग्यार्थ की प्रतीति करता है। इसके दो प्रकार हैं–संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि और असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि या रस ध्वनि–

***(i)* संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि**–इसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ तक आने का क्रम लक्षित होता है।

***(ii)* असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि**–जहां पर वाच्यार्थ ग्रहण करने का क्रम निर्धारित नहीं होता है, वह वाच्यार्थ कहलाता है। उसके बाद यह व्यंग्यार्थ है, वहां यह असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि कहलाती है। जिस प्रकार रचना को पढ़कर पाठक के मन में रस कब उत्पन्न हुआ, यह कहना कठिन है, परंतु रस की निष्पत्ति होना वास्तविक है। असंलक्ष्य ध्वनिक्रम अनेक प्रकार की होती है, जैसे–रस, भाव, रसाभास, भावशबलता, भावोदय, भावसनिध और भावशान्ति।

(ख) लक्षणामूला ध्वनि–काव्य में लक्षणामूलाक ध्वनि के मुख्यार्थ में रुकावट होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के सहारे उससे संबंधित, जहां पर अन्य अर्थ लक्षित होता है, वहां लक्षणा शक्ति होती है। इसके दो प्रकार हैं–

***(i)* अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि**–जिस ध्वनि से वाच्यार्थ अपना पूरा तिरोभाव न करके केवल अपना अर्थ रखते हुए दूसरे अर्थ में संक्रमण करता है, वहां अर्थांतर संक्रमित ध्वनि होती है।

***(ii)* अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि**–जिस ध्वनि में वाच्यार्थ का हमेशा के लिए त्याग हो जाता है, वह तिरस्कृत वाच्य ध्वनि कहलाती है। इस प्रकार का लक्षण लक्षणा शब्द शक्ति पर आधारित है।

1. शाब्दी व्यंजना में शब्द की प्रधानता रहती है अर्थात शब्द विशेष के कारण ही व्यंग्यार्थ की प्राप्ति होती है। इसके भी दो प्रकार हैं–अभिधामूला शब्दी व्यंजना और लक्षणामूलाशाब्दी व्यंजना।

2. आर्थी व्यंजना–जिस शब्द शक्ति में शब्द से अर्थ में कोई अंतर न पड़े, वह आर्थी व्यंजना कहलाती है।

वक्रोति सम्प्रदाय

आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। वक्रोक्ति में किसी भी कथन को प्रत्यक्ष रूप से न कहकर अप्रत्यक्ष रूप में कहते हैं। कुन्तक ने अपने ग्रंथ 'वक्रोक्तिजीविम्' में इसे सैद्धांतिक मान्यता दी है।

कुन्तक मानते हैं कि अलंकार के प्रयोग के बिना काव्य काव्यहीन हो जाता है। कुन्तक वक्रोक्ति के छः प्रकार मानते हैं–

1. वर्ण विन्यास वक्रता
2. पद पूर्वार्ध वक्रता
3. पदपरार्ध वक्रता
4. वाक्य वक्रता
5. प्रकरण वक्रता
6. प्रबंध वक्रता।

कुन्तक के सिद्धांत में कलापक्ष पर बल होने पर भर भी संपूर्ण काव्य को स्वीकृति मिली है। आचार्य कुन्तक द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण एवं मौलिक सिद्धांत है।

औचित्य संप्रदाय

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा काफी प्राचीन मानी जाती है। आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। उचित के भाव का नाम औचित्य है। क्षेमेन्द्र ने यथा सदृश्य प्रयोग को उचित और उस उचित के भाव को औचित्य माना है। क्षेमेन्द्र के मतानुसार जिस प्रकार कण्ठ में मेखला, नितम्ब में हार, हाथों में नूपुर आदि औचित्य के कारण हास्यापद होते हैं। उनके अनुसार–

''उचितस्थानविन्यासदलंकृतिरलंकृति
औचित्यादच्चुताः नित्यं भवन्त्येव गुणाः।''

अर्थात अलंकारों और गुणों के भी अयथास्थान प्रयोग से उनका महत्त्व समाप्त हो जाता है। वास्तविक रूप से काव्य ही नहीं मानव जीवन के विविध दैनिक क्रियाकलाप एवं व्यवहार में औचित्य का आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण स्थान है। औचित्य काव्य का एक महत्त्वपूर्ण तथा अनिवार्य तत्व है। इसे काव्य का सर्वस्व मानने का श्रेय तो अभिनवगुप्त के शिष्य क्षेमेन्द्र को जाता है। क्षेमेन्द्र ने 'औचित्य विचार चर्चा' ग्रंथ में रस को काव्य का जीवित तत्व मानते हुए औचित्य को रस का जीवनाधार माना है। काव्य का स्थायी धर्म औचित्य ही है। भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में भी इसका संकेत मिलता है।

क्षेमेन्द्र मानते हैं कि औचित्य के बिना अलंकारों, गुणों, रीतियों का कोई महत्व नहीं है। काव्य का स्थायी धर्म औचित्य ही है। वे संख्या की दृष्टि से 28 माने जाते हैं–1. पद, 2. वाक्य, 3. क्रिया, 4. कारक, 5. लिंग, 6. वचन 7. विशेषण 8. उपसर्ग, 9. नियात, 10. प्रबंध, 11. गुण, 12. अलंकार, 13. रस, 14. सार-संग्रह, 15. तत्व, 16. आर्शीवाद, 17. काव्य के अन्य अंग, 18. व्रत, 19. तत्व, 20. अभिप्राय, 21. स्वभाव, 22. प्रतिभा, 23. विचार, 24. नाम, 25. काल, 26. देश, 27. कुल 28. अवस्था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. काव्यशास्त्र का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–काव्य मनुष्य चेतना की विभिन्न सृष्टियों की सबसे महान रचनात्मक सृष्टि है। काव्यशास्त्र में इसी का विश्लेषण किया जाता है। काव्य का अभिप्राय काव्य के लक्षण निर्धारित करना होता है। काव्यशास्त्र में साहित्य का दर्शन एवं विज्ञान निहित होता है। आचार्यों द्वारा काव्यकृतियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर विभिन्न सिद्धांतों की रचना की गई। प्राचीन काल में काव्यशास्त्र को साहित्यशास्त्र और अलंकारशास्त्र के नाम से भी जाना जाता था। हर युग में परिस्थितियों के अनुसार काव्य और साहित्य के कथ्य और शिल्प में परिवर्तन होता रहता है। इसी तरह काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों में भी परिवर्तन होता रहा।

कवि बाह्य जगत एवं जीवन से मिले अनुभवों को अपनी प्रतिभा के बल पर रसमय एवं मनोरंजक बनाकर उसकी संरचना करता है। जिस प्रकार बाह्य जगत में बदलाव होता है, उसी प्रकार कवित की अनुभूति में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप काव्य में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। प्राचीन विद्वानों ने इस बदलाव को महसूस किया है। उसके बाद काव्य रचना की पद्धति एवं उसके प्रयोजन की व्याख्या को प्रस्तुत किया है।

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है और प्रत्येक व्यक्ति को उसका अध्ययन जरूरी है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में काव्य का अध्ययन आवश्यक होता है, क्योंकि काव्य व्यक्ति के अंदर जीवन मूल्यों के अलावा प्रकृति दृष्टि से भिन्न भिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं और मानव के प्रति संवेदना जागृत करने का कार्य करता है। काव्य के तत्व और काव्य रचना की प्रक्रिया के सिद्धांतों का वर्णन ही काव्यशास्त्र का मूल प्रयोजन होता है।

मनुष्य मन की मूल प्रवृतियां–सुख, दुःख, हर्ष, शोक, क्रोध, विस्मय, घृणा, जुगुप्सा, भय आदि वास्तविक हैं और काव्य का कथन इन्हीं के आस-पास घूमता है। भारतीय काव्यशास्त्र की इस परंपरा को विभिन्न आचार्यों ने अपने माध्यम से आगे बढ़ाया है। काव्य के लिए आवश्यक तत्वों को सिद्धांत रूप में प्रतिष्ठित कर काव्य को आनंददायक बनाकर काव्यशोभा में वृद्धि हेतु काव्यशास्त्र से संबंधित आचार्यों विद्वानों का संक्षिप्त विवरण निम्न आधार पर है।

भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में काव्य में रस के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। काव्य का अध्ययन करने या नाटक के अभिनय को देखकर पाठक के मन में जिस आनंद का अनुभव होता है, वही रस है। काव्य रस के रसास्वाद को पाठक या श्रोता के अनुभव के संदर्भ में रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदाय काव्यशास्त्र में निर्मित हुए। काव्यशास्त्र काव्य के सम्प्रदायों द्वारा अपने सिद्धांत रस, अलंकार, रीति वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे सम्प्रदायों द्वारा काव्य के सौंदर्य में वृद्धि करने की व्याख्या करने वाला शास्त्र है।

भामह–सर्वप्रथम भामह ने ही अलंकारों को नाट्यशास्त्र की परतन्त्रता से मुक्त कर एक स्वतंत्र शास्त्र या संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'काव्यालंकार' में अलंकारों को विशेष महत्त्व दिया गया है। इन्होंने वक्रोक्ति को सब अलंकारों का मूल माना है। काव्य का लक्षण सर्वप्रथम भामह ने प्रस्तुत किया। इसी प्रकार दस के स्थान पर तीन काव्य गुणों की स्वीकृति भी भामह ने सर्वप्रथम दी।

दण्डी–दण्डी अलंकार सम्प्रदाय से संबंध रखते थे। इनके तीन ग्रंथ वर्तमान में उपलब्ध हैं, जिनमें 'काव्यादर्श', 'दशकुमारचरित' और 'अवन्तिसुन्दरी कथा' प्रमुख हैं। इनका पहला ग्रंथ काव्यशास्त्र पर आधारित है तथा अन्य दो गद्य काव्य में रचे गये हैं। काव्य के विभिन्न अंगों का अलंकार में आधारित समझना इनका मान्य सिद्धांत माना जाता था। आचार्य भामह की तरह दण्डी भी वैदर्भ और गौड इन दो काव्य रूपों को माना है तथा इन्हें मार्ग नाम दिया है। गौड मार्ग की अपेक्षा वैदर्भ मार्ग का ये अधिक अनुसरण करते थे, परंतु गौड मार्ग को कभी भी त्याज्य नहीं माना।

उद्‌भट–ये अलंकारवादी आचार्य माने जाते हैं। इनके तीन ग्रंथ प्रसिद्ध माने जाते हैं–'काव्यलंकारसारसंग्रह', 'भामह-विवरण' और 'कुमारसंभव'। इन सभी ग्रंथों में केवल प्रथम ग्रंथ ही उपलब्ध पाया जाता है, जिनके अंतर्गत अलंकारों का आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है। उद्‌भट दण्डी के समान ही रस, भाव आदि को रसवादी अलंकारों के अंतर्गत मानते हैं। अलंकारों को सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप देने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले इन मतों को आचार्यों ने अपने अनुसार परिभाषित किया है। अधिकांश आचार्य रस को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हैं। परंतु आधुनिक संदर्भ में विद्वानों ने रस को काव्य सौंदर्य में वृद्धि करने वाला तो माना है, लेकिन यह काव्य के मूल काव्य सौंदर्य बढ़ाने में समर्थ नहीं है।

अंततः कहा जा सकता है कि काव्य के मुख्य प्रयोजन में आनंद ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पाठक या श्रोता इस आनंद की अनुभूति कैसे हो और इसी संदर्भ में काव्य के अनेक तत्व, जैसे–अलंकार, रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य सम्प्रदाय उभरकर सामने आये।

प्रश्न 2. भरतमुनि के रससूत्र को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–आचार्य भरतमुनि रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने 'नाट्यशास्त्र' की रचना कर नाटक के मूल तत्वों का विस्तृत विवेचन करते हुए रस का वर्णन किया है। वे रस को नाटक का प्राणतत्व मानते थे। मनुष्य के जीवन में 'रस' का प्रयोग

www.neerajbooks.com